॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रातःकाल की अग्नि! तू हवि है : तू हव्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाली है। तू हमें हव्य पदार्थों का पान करा, जिससे हम देवता बन जाएँ और देवतागणों के समाज में विराजमान होकर देववाणियों को विचारें। हमारी हर स्थान में देवप्रवृत्ति ही बनी रहे। हे परमात्मन्! तू कल्याण करने वाला है, हमारे कल्याण के लिए तूने नाना सामग्री उत्पन्न की है। हे प्रभु! हम आपसे कल्याण चाहते हैं।

हे इन्द्र! इस संसार को नियम से बनाने वाले! हमारे जीवन को भी नियमित बना। जब हमारा जीवन नियमित होगा, तो हम कुछ कार्य कर सकेंगे। आपने प्रातःकाल में सूर्य को उत्पन्न किया है। इसी प्रकार हे देव! हम उस महान् ज्योति को चाहते हैं जिससे हमारा आत्मिक-कल्याण हो। वह कौन-सी ज्योति है?

वह ज्योति हमारी सन्ध्या की व्याहृतियाँ हैं। जब सन्ध्या की व्याहृतियों को जाना जाता है तो वह सन्ध्या वास्तव में हमारा कल्याण करा देती है। जब देवता सन्ध्या के द्वार पर जाते हैं तो सन्ध्या पुकार कर कहती है कि तुम यदि मेरा आदर करोगे, अनुकरण करोगे, तो संसार में देवता बन जाओंगे। यदि तुम मुझे ठुकराओगे तो तुम संसार में ठुकराए जाओंगे।

अतः सन्ध्या के अनुकरण से मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है और जिस मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन गया, उसका वास्तव में कल्याण हो गया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 581 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 656
वर्ष : 49 44 समग्र वर्ष : 56

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. उद्‌गाता	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द जी महाराज	5-19
4. महाराजा अश्वपति का राष्ट्र	पूज्यपाद-गुरुदेव	20-36
5. ऋषियों के उद्‌गार		37
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

पूज्यपाद गुरुदेव का जन्मोत्सव

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज, आदि गुरु ब्रह्मा जी के परम प्रिय एवम् ज्येष्ठ शिष्य के 79वें जन्मोत्सव की पावन वेला के शुभागमन पर दिनाँक 22 सितम्बर से 23 सितम्बर 2021 तक गुरुदेव की कर्मभूमि एवम् निर्माणीत यज्ञीय स्थली लाक्षागृह वारणावत में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्राङ्गण में श्रीगाँधी धाम समिति (पञ्जी.) के द्वारा सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ के माध्यम से प्रति वर्ष की भाँति बड़े हर्षोल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि योगनिष्ठ गुरुदेव द्वारा पुनः से प्रज्वलित इस यज्ञ ज्योति को निरन्तर ऊर्ध्वा में ले जाने के लिए आप अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित भाग लेकर आहुति प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

उद्गाता

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, वह हमारे वरणीय कहलाते हैं। जो भी मानव उसका वरण कर लेता है अथवा उसे वर लेता है वह प्रायः उसी को प्राप्त हो जाता है। जितना भी यह मानवीय जगत हैं मानो चाहे वह जड़वत् के रूप में हो, चाहे वह चैतन्यवत् के रूप में हो। मानो उस चेतना में, दोनों रूपों में उस चेतना का भान रहता है अथवा उसकी प्रतीति होती है। तो हमें उस परमपिता परमात्मा को अपना वरणीय बना लेना चाहिए क्योंकि जितना यह व्यापक जगत हमें दृष्टिपात आता है उसी भिन्न-भिन्न प्रकार के प्राणी, भिन्न-भिन्न प्रकार का अपने में जगत एक अनूठा माना गया है जिसके ऊपर मानव, ऋषि-मुनि अपने में अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करते रहते हैं।

यागों का चयन

आज का हमारा वेद मन्त्रः कुछ याग के सम्बन्ध में अपनी चर्चा कर रहा है यागाम् रुद्र भागाम् ब्रह्म लोका। मानो यह जो ब्रह्माण्ड है ये एक प्रकार का यज्ञमयी स्वरूप माना गया है जिसकी आभा में बेटा! ये सर्वत्र जगत मानो निहित हो रहा है। बहुत पुरातन काल हुआ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का वैदिक रूपों से जानने की बड़ी उत्कट इच्छा हुई। नाना

ऋषि-मुनियों का समूह उनकी विचारधाराएँ जब स्मरण आईं तो ये नाना प्रकार के यागों का चयन मानवीय मस्तिष्क में होता रहा। एक हमारे यहाँ अश्वमेध याग है, हमारे यहाँ अग्निष्टोम याग है, वाजपेयी याग है। अश्वमेध मानो अजामेध और नाना जैसे पुत्रेष्टि यागों का चयन भी होता रहा है। यह हमारे वैदिक साहित्य से भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन और नाना प्रकार के यागों की प्रतिभा होती रही है।

पण अकाल

मुझे स्मरण आता रहता है एक समय बेटा! पण अकाल हो गया था। पण अकाल उसे कहते हैं वृष्टि अति हो गई और वृष्टि अति होने के पश्चात् मानो देखो, जल ही जल प्रतीत हुआ। वृष्टि से मानव की जन सम्पदा की हानि हुई। वृष्टि जब पण अकाल हुआ, अन्न नहीं रहा पृथ्वी पर, न पशु का रहा। तो मेरे प्यारे! देखो, अन्न प्राप्त नहीं हुआ। मुझे स्मरण है महर्षि चाक्राण मुनि मेरे प्यारे! देखो, अन्न से पीड़ित थे। अपने गृह में जब उन्होंने प्रवेश किया तो उनकी पत्नी बड़ी व्याकुल हो रही थी। और उन्होंने कहा कि मुझे अन्नाम् ब्रह्मे वरणस्तम, मुझे यदि अन्न का प्राप्त नहीं होगा तो मेरे प्राणान्त हो जाएँगे। अब चाक्राण ने विचारा कि अन्न कहाँ प्राप्त हो सकता है।

प्राणों की रक्षा के लिए आश्रय

मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि चाक्राण ने भ्रमण किया और विचारम् ब्रह्मे बेटा! एक हाथीवान् के द्वार पर पहुँचे। हाथीवान् हाथी पर विद्यमान हो करके बेटा! वह अन्न का पान कर रहा था, वह महा का पान कर रहा था। मानो जब उसके समीप पहुँच उन्होंने कहा भिक्षामयी देई। अब मुनिवरो! देखो, हाथीवान् ने अपने में से मानो एक मुट्ठी भर उन्होंने बेटा! उन उड़दों का दान किया। जब उन्हें उड़द प्रदान कर दिए तो वह कहता है हाथीवान् कि महाराज जलम् ब्रह्मे हृदये। उन्होंने कहा शुद्रो भवि सम्भवा। जो वाक्य उन्होंने उच्चारण किए क्या मैं जल भी लाऊँ उन्होंने कहा तू शूद्र है। तो मेरे प्यारे! देखो, हाथीवान्

आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने कहा प्रभु मेरे जो झूठे उड़द है उनमें तो में शूद्र नहीं हूँ और जल को लाने से मैं शूद्र कैसे बन जाऊँगा? तो मुनिवरो! देखो, उन्होंने कहा, चाक्राण ऋषि महाराज ने वेद का एक मन्त्र उन्हें उद्गीत रूप में गाया और उन्होंने कहा **सोतम् ब्रह्मे सम्भवा जलम् ब्रहे अन्नादाम् भिक्षम् भवे सम्भवा अस्ति।** वेद का ऋषि कहता है हे हाथीवान्! अन्न का तो अभाव है क्योंकि पण अकाल हो गया है। अन्न कहीं प्राप्त नहीं है मानो देखो, प्राणों की रक्षा करनी है और प्राणों की रक्षा में मानो झूठ, मानो मिथ्याम् ब्रहे, उसमें झूठ का कोई प्रश्न नहीं आता। प्राणों की रक्षा करनी है। और जल बहुत है इसलिए मैं इसका तुम्हारा आश्रमय क्यों बनूँ? मैं तुम्हारा आश्रय नहीं लेना चाहता हूँ जल के सम्बन्ध में, केवल प्राणों की रक्षा में तुम्हारा आश्रय लेना चाहता हूँ। अब मेरे पुत्रो! देखो, ये उत्तर दे करके महर्षि चाक्राण अपने गृह में पहुँचे। अपने गृह में पहुँचे तो वहाँ उनकी पत्नी को कोई-कोई श्वास की गति आ रही थी। मानो वो गतिअम् ब्रहे, उन्होंने कहा देवी! तुम इस अन्न को पान करो। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने अन्न का पान किया, प्राणों की गति तीव्र बनी। मानो प्राणों की रक्षा हो गयी। अब मुनिवरो! देखो, उन्होंने कहा, देवी! ये और अन्न आपको अब नहीं ला सकूँगा क्योंकि कल मैं महाराजा अश्वपति के यहाँ एक मानो देखो, उनके यहाँ एक वाजपेयी याग हो रहा है। मैं उस याग में उद्गाता बनूँगा और उद्गाता बन करके ही मानो मैं तुम्हारे लिए अन्न ला सकता हूँ। तो मुनिवरो! देखो, महर्षि के वाक्यों को पान करके पत्नी अपने में प्राणों की रक्षा में कर्त्तव्य ब्रहे, प्राणों की रक्षा तो उनकी हो ही गयी।

उद्गाता की विवेचना

अगला दिवस आया महर्षि चाक्राण ने अपने आसन को त्याग दिया और भ्रमण करते हुए महर्षि बेटा! देखो महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में पहुँचे। महाराजा अश्वपति के यहाँ मानो देखो वाजपेयी याग हो रहा था। जिस याग के ब्रह्मा महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज विद्यमान थे। महर्षि

उद्गाता के रूप में, अध्वर्यु के रूप में बेटा! महर्षि वैशम्पायन थे। और देखो राजा अश्वपति उस याग के यजमान बन करके, उनके मानो देखो, महर्षि श्वेतकेतु मुनि देखो, उस याग के पुरोहित बन करके और देखो वो याग प्रारम्भ हो रहा था। मुनिवरो! जैसे याग प्रारम्भ हुआ तो उद्गाता के आसन पर कोई नहीं परन्तु उस आसन पर जा करके महर्षि चाक्राण विद्यमान हो गए। जब चाक्राण विद्यमान हो गए तो मुनिवरो! देखो, उस समय महाराजा अश्वपति ने कहा हे ऋषिवर! ये वाजपेयी याग है तुम्हें यह प्रतीत है? उन्होंने कहा हाँ प्रभु! मैं जानता हूँ कि आप वाजपेयी याग कर रहे हैं क्योंकि पण अकाल हुआ है और मैं इसका उद्गाता बनना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, जब उद्गाता बनने का प्रसङ्ग आया तो उस समय ऋषि ब्रहे, राजा अश्वपति ने कहा क्या हे ऋषिवर! उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा जो उद्गीत गाने वाला हो। उन्होंने कहा उसका देवता कौन है? उन्होंने कहा उद्गीत गाने वाले का उद्गाता ब्रहे मानो वह सूर्य है, वह प्रकाश देता है, कान्ति देने वाला है। वह मानो देखो, उसी की तरङ्गों में तरङ्गित होना होता है तो इसलिए देखो, वह उद्गाता है। मेरे पुत्रो! देखो, राजा ने पुनः ये कहा क्या हे भगवन्! रनसम्भवी सम्भवा ब्रहेन अस्ति। मानो देखो, उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा उद्गाता वह है जो वेदों का उद्गीत गाता है और वेदों के मन्त्रों के द्वारा उद्गीत गाता हुआ मानो अपनी अन्तरात्मा को शान्त करने वाला है और यजमान की वाणी को पवित्र बनाता है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा इसका देवता कौन है? उन्होंने कहा इसका देवता वायु है, उद्गाता का देवता वायु है क्योंकि वायु जब उद्गीत गाती है तो प्रकाश होता है, मानो वायु जब वेग में गति करती है तो मुनिवरो! देखो, वह अग्नि का प्रकाश हो जाता है। अग्नि प्रकाश में परणित हो जाती है। उन्होंने कहा ये वायु ही देवता है इस मानो वाजपेयी याग, का देवता कौन–वायु। मेरे पुत्रो! देखो जब उन्होंने वायु का नामोकरण किया तो उन्होंने पुनः प्रश्न किया क्या हे उद्गाता! इस याग का उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा उद्गाता प्रभु इस याग का उद्गीत गाने वाला, सोम की वृष्टि करने वाला चन्द्रमा है। वह

चन्द्रमा ही तो सोम की वृष्टि करता है, अमृत को देने वाला है, वही तो आपोमयी ज्योति कहलाता है। बेटा! देखो, वह मौन हो गए।

जब वह मौन हो गए राजा ने पुनः यह कहा कि महाराज यह जो **यज्ञशाला है इसका कौन देवता है?** उन्होंने कहा यज्ञशाला का देवता पञ्चमहाभूत हैं क्योंकि ये सर्वाङ्ग एक पूजन है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा ये सर्वाङ्ग पूजन है। जिस पूजन की आभा में इस पूजन की आभा में मानव को संलग्न रहना चाहिए। मेरे पुत्रो! देखो वह सर्वाङ्गम् ब्रह्मा इसलिए इसका देवता जो सर्वाङ्ग सृष्टि का निर्माण करने वाला ब्रह्मा है वही उद्गीत गाने वाला, वही इस यज्ञशाला का अधिपति कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, सोम की जो ये यज्ञशाला है, ये सोम की यज्ञशाला का जो ऊर्ध्वामुख है वह द्यौ कहलाता है। वह द्यौ लोक में ही तो ये तरङ्गें जाती हैं।

मेरे पुत्रो! देखो यज्ञशाला में इसलिए **स्वाहा** उच्चारण करने का महत्त्व माना गया है क्योंकि वह जो स्वाहा शब्द है, मन्त्र का देवता है देवता के साथ स्वाहा है और वह स्वाहा मुनिवरो! देखो, भूः भुवः स्वः वह स्वः में मानो द्यौ लोक में, वह द्यौ में प्रवेश कर जाता है और द्यौ में जा करके ही मुनिवरो! देखो शब्द का आकार बनता है और शब्द वामकृति की मानो द्यौ आभा में प्रवेश हो जाता है। मेरे पुत्रो! मैं इस शब्द के विज्ञान में तो जाना नहीं चाहूँगा केवल विचार-विनिमय ये है क्या हम मुनिवरो! देखो द्यौ को अपने में धारण करना चाहते हैं। ये जो द्यौ है, ये ब्रह्मा है। मुनिवरो! देखो वह राजा मौन हो गया।

ऋषि ने कहा कि ब्रह्मा परमात्मन् इस संसार का, यज्ञ का अधिपति माना गया है। वह योगा में रहता है इसलिए **याग मानो देखो, यजमान की प्रथम पगडण्डी कहलाती है।** वह प्रत्यक्ष मोक्ष में जाने की, आनन्द में जाने की प्रथम मानो पगडण्डी है। इसलिए हमारे यहाँ प्रत्येक देखो जब वह ब्रहा राजा ने कहा चलो, हे उद्गाता! तुम गीत गाने योग्य हो, उद्गीत गाने के योग्य हो क्योंकि जो उद्गीत गाता है इस वाणी में कौन देवता है उद्गीत

गाने का? उन्होंने कहा क्या उद्गीत गाना केवल अग्नि है। वह अग्नि का जब समन्वय हुआ जल की पुट लगी और मानो देखो, वायु बाह्य और आन्तरिक जगत में प्रवेश कर गयी और देखो, उसी आभा में बेटा! मानो देखो, उद्गान गाना प्रारम्भ कर देता है। उद्गाता जिस समय उद्गान गाता है, जिस समय मानो देखो, अपनी वाणी के ऊपर संयम करता हुआ और यह विचारता है कि मेरे यजमान की वाणी पवित्र हो जाए, वाणी में उद्गीत गाने लगता है। तो मेरे प्यारे! मैं इस याज्ञिक विज्ञान में तो जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि हम अपने में उद्गीत गाने वाले बने। मेरे प्यारे! देखो, सोम के द्वारा हम अपने में जागरुक बन करके ही मुनिवरो! देखो, हम याज्ञिक बनते चले जाएँ।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे बहुत पुरातन काल हुआ मेरे प्यारे! महानन्द जी मुझे प्रेरणा देते रहते हैं, याग के सम्बन्ध में उद्गीत गाने की प्रेरणा देते रहते हैं। अब मैं विशेष चर्चा तो देने नहीं जाऊँगा क्योंकि देखो याग बेटा! प्रारम्भ हो गया। जब वाजपेयी याग का प्रारम्भ हुआ तो उन्होंने कहा सम्भूति ब्रह्म लोकाम्। मेरे प्यारे! देखो, सायं काल को यजमान ने जब दक्षिणा प्रदान की वह अन्न को, ब्रह्मे ले करके ही मुनिवरो! देखो, वह अपने गृह में प्रवेश हुए और उन्होंने अपनी पत्नी को वह अन्नाद पान कराया। उन्होंने कहा देवी! मैं आज महाराजा अश्वपति के याग में, मैं उद्गाता बना हुआ हूँ तुम अन्न को पान करो और मैं उद्गाता के लिए पुनः मानो प्रातःकालीन पुनः जाऊँगा।

पुनरुक्ति देवता

मेरे प्यारे! देखो, वह पुनः अगले दिवस वे उस यज्ञशाला में पुनः पधारे। राजा ने कहा क्या महाराज ये पुनरुक्ति देवता कौन है? उन्होंने कहा पुनरुक्ति दिवस है, एक दिवस आया है, रात्रि आई, दिवस आया ये मानो देखो पुनरुक्ति देवता कहलाता है। इस पुनरुक्ति देवता के गर्भ में मानव की आयु निहित हो जाती है। बेटा! देखो, ऋषि कहता है क्या पुनरुक्ति में ही मानव की आयु है। जैसे बेटा! देखो श्वास आता है प्राणम् ब्रह्मे कृताम्

बेटा! वह गति करता ऊर्ध्वा में, ध्रुवा में गति करने वाला है। तो वही तो हमारा सखा है, वही तो प्राणत्व कहलाता है, वही तो मानव की आभा में निहित रहता है। तो बेटा! आज मैं विशेष चर्चा तो प्रगट करने नहीं जाऊँगा। अब मेरे प्यारे! महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

सम भविता रुद्रो मं प्रजाम् युवयाः

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव वाजपेयी याग के सम्बन्ध में और भी भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों के सम्बन्ध में अपनी चर्चा कर रहे थे क्योंकि मेरे पूज्यपाद का जो ये अनुपम ज्ञान है ये बड़ा विचित्र और नितान्ता में परणित रहा है हमारे हृदयों में प्रायः उनकी छवि परणित रहती है और हमारा हृदय यह कहता रहता है कि हम इन वाक्यों को प्रायः श्रवण ही करते रहें। इनका वाक्य आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान से गुथा हुआ होता है और जितना भौतिक विज्ञान है वह आध्यात्मिकवादी ही मानो देखो, एक आभा में निहित रहता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ परिचय तो देना नहीं चाहता हूँ क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कहीं अश्वमेध याग की चर्चा कर रहे हैं, कहीं नरमेध याग, गौमेध यागों की चर्चाएँ करते रहते हैं। आज उन्होंने वाजपेयी याग की चर्चा की है। वाजपेयी याग मानो राजा करता है जिससे वृष्टि शान्त हो जाए और ये पृथ्वी, पृथ्वी में देखो यहाँ बलि का वर्णन हो जाए ऐसा मानो देखो, उनका मन्तव्य रहता है। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन करते हुए कहा था कि इन यागों का महाभारत काल के पश्चात् बड़ा तिरस्कार हुआ है और वह तिरस्कृत करने वाले जो ये मानव समाज रहा है उसको हम वाम मार्ग कहते हैं। परन्तु वह प्रथा कहाँ से कहाँ तक चली और कहाँ वह जा करके देखो उसका अब अन्त होने जा रहा है। मैं अन्त तो नहीं कह सकता वास्तव में तो उसकी वृद्धि हो रही है परन्तु अन्त मैं इसलिए कहता हूँ कि जिस माध्यम से उसका प्रसार हुआ उस प्रसार की प्रवृत्तियाँ

समाप्त हो गयी हैं। मानो देखो, पुरातन काल में यागों के चलन में, महाभारत काल के पश्चात् उन बुद्धिमानों का अभाव हो गया और उस अभाव के कारण देखो यहाँ वाम मार्ग पनपा। और वाम मार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गति करने वाला हो। जो उल्टे मार्ग को लेता है उसको हम वाम मार्ग कहते हैं, जो पामर प्रवृत्ति का होता है, हिंसक होता है, जो मांसहारी होता है, जो अपने उदर को केवल मानो देखो, मांसों की उत्तरियाँ बना लेता है। ऐसे मानव को मैं प्रायः वाम मार्ग कहता हूँ, जो धर्म के नामों पर, देखो उसके नामों पर अपने आहार को अशुद्ध बना लेता है वह वाम मार्ग कहलाता है। परन्तु देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को तो मैंने कई काल में ये मानो परिचय दिया है। आज मैं बारम्बार उन परिचयों को देता रहता हूँ।

पुरातन काल और आधुनिक काल

पूज्यपाद गुरुदेव को मैं वर्णन कराना चाहता हूँ क्या हमारे पुरातन काल में जैसा पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी वर्णन कर रहे थे कि महाराजा अश्वपति का राष्ट्र–अश्वपति के राष्ट्र में जब अति वृष्टि हो गयी, तो उन्होंने वाजपेयी याग की रचना की उससे वृष्टि शान्त हो गयी, क्योंकि राजा जिस प्रयत्न को करता है प्रजा उसी के अनुसार बरतने लगती है। आधुनिक काल का जो राजा है मानो देखो, वह यागों को अग्रणीय नहीं बना रहा है। अग्रणीय क्यों नहीं बना रहा है क्योंकि वह नाना प्रकार की सम्प्रदाय के मूल में मानो देखो, यागों का चलन नहीं होता। याग को केवल हम रूढ़ि नहीं कह सकते क्योंकि याग तो एक व्यापक कर्म है, एक मानवीय कर्म कहलाता है और राजा यह जानता है कि ये याग एक सम्प्रदायिक माना गया है। जब राष्ट्र यह स्वीकार करता है परन्तु वह सम्प्रदा तो नहीं कहता याग को, वह सूक्ष्म विचारधारा परन्तु याग इसलिए नहीं कर पाता क्या नाना प्रकार के सम्प्रदाय, ये जो रूढ़िवाद हैं ये राजा के राष्ट्र का ह्रास कर रहे हैं जब मैं यह विचारता हूँ तो मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को देखो

महाराजा अश्वपति का वर्णन करते हैं कि राजा अश्वमेध याग देखो यहाँ वाजपेयी यागों का चलन राजा के राष्ट्र में होता है। राजा को करना चाहिए क्योंकि यदि प्रजा को सुखद बनाना चाहता है। मानो देखो, आधुनिक काल का राष्ट्र यह चाहता है कि प्रजा को जितना भी निठल्ला बनाया जाता है उतनी ही तेरे राष्ट्र की प्रतिभा ऊँची बनती है। आधुनिक समाज की यह प्रतिभा बनी हुई है, राष्ट्र की ये कुरूतियाँ बनी हुई हैं इसके ऊपर देखो राष्ट्र को विचारना है क्या राष्ट्र को अपने आहार और व्यवहार को ऊँचा बनाना है। यह रूढ़िवाद जब तक राष्ट्र में पनपता रहेगा, समाज में पनपता रहेगा राष्ट्रवाद कदापि भी ऊँचा नहीं बन सकता है, ये असम्भव है।

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यहाँ कई काल में वर्णन करते हुए कहा था क्या यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियों में ये राष्ट्र परणित हो रहा है– कहीं यहाँ मोहम्मद के मानने वाले हैं, कहीं ईसा के मानने वाले हैं, कहीं मानो देखो, यहाँ नानक के मानने वाले हैं सब एक-दूसरे के रक्त के पिपासु बने हुए हैं। मानो देखो, इसके सम्बन्ध में मैंने अपनी बहुत पुरातन चर्चाएँ प्रगट की हैं। जब मैं पूरा अतीत के काल में प्रवेश करता हूँ, आधुनिक काल के राष्ट्रवाद को लेता हूँ तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे युग में अपने वाक्यों को प्रगट कर रहे हैं। मानो ऐसा युग है ये क्या इसमें नाना प्रकार की देखो, मानता वाले और राष्ट्र कहता है नाना धर्म कहने लगता है जब यह राजा, राष्ट्र के कर्मचारी जब ये एक मानो नाना धर्म कहते हैं तो मैं ये विचारता रहता हूँ, क्या इन्होंने किसी विद्यालयों में शिक्षा पायी है अथवा नहीं मुझे तो यह भी सन्देह बना रहता है क्योंकि जब धर्म एकोकी वचन है वो मानो देखो, नाना धर्मों की चर्चा कहा से कर रहा है, ये विचार नहीं आ रहा है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह कहता हूँ कि आधुनिक काल का राष्ट्र नाना धर्म कहता है ऊर्ध्वा में सभाओं को ये सम्बोधित करता हुआ क्या मैं नाना धर्मों को स्वीकार करता हूँ। मैं विचार रहा हूँ हे भोले प्राणी! क्या तू नाना धर्म कह रहा है धर्म तो एक ही वचन है, ये बहुवचन क्यों माना। मानो देखो, धर्म तो मानवीयता को कहते हैं, धर्म तो मानव की

इन्द्रियों में समाहित रहता है उसको कौन ऐसा अभागा प्राणी है संसार का जो उसे धर्म नहीं कह सकता और तू नाना धर्म उच्चारण कर रहा है। नाना धर्म तो बनते ही नहीं है संसार में। मेरे पुत्रो! भवा सम्भवे लोकाम् मेरे प्यारे! पूज्यपाद गुरुदेव ने हमें कई काल में वर्णन कराया जैसे पुत्रो रम्भा, पुत्र कह करके, सम्बोधित करके ये कहा क्या तुम मानो देखो, एकोकी धर्म के मर्म को जानने वाले बनो।

हम भी यही कहते हैं हे राजन्! आधुनिक काल के समाज को भी अपने धर्म को, देखो धर्म के मर्म को जानने वाला बन। हे राजन्! तू अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है तो राष्ट्र ऊँचा उस काल में बनता है जब कि मनु वंश की प्रणाली तेरे द्वार पर होगी क्योंकि इस संसार का ये मैंने कई काल में वर्णन किया है क्या इस संसार का जब मानो देखो, राष्ट्रवाद का निर्माण हुआ है, राष्ट्रवाद वास्तव में कोई वाद नहीं कहलाता है, राष्ट्रवाद कहते हैं अनुशासन को। अनुशासन का नाम राष्ट्रवाद है। बाह्य जगत का जो अनुशासन उसका नाम राष्ट्रवाद है और जो इन्द्रियों पर अनुशासन करता है वह आध्यात्मिक राष्ट्रवाद कहलाता है। यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की राष्ट्रीय प्रणालियों में केवल देखो एक अनुशासन ही ऐसा एक शब्द है, एक एकोकी धर्ममज्य हो मानवता का एक शब्द है जिसको अपना करके मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है। आज मैं विचार न देता हुआ अपने पूज्यपाद गुरुदेव को वर्णन कराता हूँ क्या हे प्रभु! आधुनिक काल का जो राष्ट्र है ये मुझे बड़ा विचित्र प्रतीत हो रहा है। आधुनिक जो काल है यह एक मानो देखो, मैंने पुरातन काल में भी कहा ये एक प्रकार का देखो वाम मार्ग है। आधुनिक काल में देखो सुरा पान करना, मांस का आहार करना–राजा जब देखो अपने आसन को त्यागता है जब नाना प्राणियों के रस को अग्नि में तपा करके पान कर लेता है। क्या मैं इसको राष्ट्र कह सकता हूँ? मेरे विचार में तो यह आ नहीं रहा है परन्तु देखो, राष्ट्र वह है भगवान् मनु जी ने मानो देखो, भगवान् मनु महाराज ने मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया क्या राष्ट्र का निर्माणवेत्ता सबसे प्रथम भगवान् मनु हुआ है और भगवान् मनु

ने मानो मछली से ले करके प्राणियों तक की रक्षा करने के लिए उन्होंने राष्ट्रवाद के लिए घोषणा की है। एक मछली की भी रक्षा होनी चाहिए, क्योंकि वह जल के दूषितपन, को वायुमण्डल के दूषितपने को अपने में सिञ्चन करने वाली है। और जितने भी प्राणी हैं संसार में, एक-दूसरे प्राणी से कटिबद्ध हो रहे हैं। एक-दूसरे से जैसे माला के मनके हैं–एक मनका, द्वितीय मनका एक सूत्र में पिरोये हुए हैं। इसी प्रकार ये जो प्राणी मात्र का जगत है एक-दूसरे में पिरोया हुआ सा जगत दृष्टिपात आता है।

आज जब मैं यह विचारता हूँ हे माता! तू शृङ्गार में शृङ्गित हो रही है परन्तु जब तेरे गर्भ से महान् पुत्रों का जन्म होगा तो ये राष्ट्र और समाज ऊँचा बनेगा मानो देखो, माता तेरा जो कण्ठमयी शृङ्गार है वो तेरी वाणी पवित्र होनी चाहिए, वह ज्ञानमयी होनी चाहिए क्योंकि जिससे तू अपने गर्भ के स्थलों में जो शिशु है, वह जो आत्मा है तू आत्मा से चर्चा कर सके। तू अपने आत्मा से आत्मा के हृदय की चर्चा कर सके माता तो वह पवित्र कहलाती है। मेरे प्यारे! देखो मैं विशेष चर्चा क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव तो ये सर्वत्र जानते रहते हैं मानो देखो, मैं तो कोई विशेष विचार देने नहीं आया हूँ, केवल मेरा तो एक ही विचार है क्या राजा का राष्ट्र पवित्र होना चाहिए। भगवान् मनु ने एक मछली को कमण्डल में पनपाया, फिर गडढेले में पनपाया वह मानो देखो, वही मछली समुद्र को चली गयी। विचार क्या देखो, मनु जी ने कहा क्या ये संसार जब ऊँचा बनता है जब मानवीय धारा पर आता है जब प्रत्येक मानो देखो, प्राणी जब अपने में प्राणत्त्व की रक्षा और आनन्द का अनुभव करने वाला हो। जब समाज में एक-दूसरे के आनन्द को अपने में धारयामी बना लेता है तो जीवन की प्रतिभा समाप्त हो जाती है।

यजमान को आशीर्वाद

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मैं वहीं आना चाहता हूँ आज हमारी जो वाणी है, ये आकाशवाणी हमारी देखो मृत मण्डल में जा रही है। मानो देखो, मैं एक याग का दर्शन कर रहा था, तो मैं आज वर्तमान में याग का दर्शन कर

रहा था। हे यजमान! मेरा जो अन्तर्हृदय है वह यजमान के साथ रहता है। मैं कहता हूँ हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे मेरी यह सदैव कामना रहती है। हे यजमान! तेरे जीवन की धाराएँ विचित्र बनी रहें और तेरा द्रव्य तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे, सदुपयोग ही इस मानव का जीवन है। यजमान तेरी वाणी में पवित्रतम् आ करके जीवन को ऊँचा बनाता रहे। तो मैं आज विशेष चर्चा न देता हुआ केवल ये वाक्य उच्चारण कर रहा हूँ क्या ऐसे वाम मार्ग के युग में जहाँ एक मानव दूसरे प्राणी का भक्षण करने के लिए तत्पर हो रहा है तेरे द्रव्य का सदुपयोग हो रहा है, देवताजन हवि को पान कर रहे हैं।

आज का विज्ञानवेत्ता कहता है कि दूषित वायुमण्डल बन गया है। मैं यह कहता हूँ हे वैज्ञानिको! तुम अपनी विज्ञानशाला में जहाँ अणु और परमाणुओं को जानते हो वहाँ साकल्य के द्वारा याग भी करो जिससे देखो वायुमण्डल दूषित न हो जाए, वायुमण्डल मानो पवित्र बना रहे। तो मानव को त्रास मत दे, तू क्रियाकलाप में ऊँचा बन। मानो देखो, इस प्रकार मैं अपनी देखो धाराओं को ले करके अपने वाक्यों को प्रकट करता रहता हूँ। आज का विचार-विनिमय क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परिचय कराने के लिए आया हूँ। मेरा ये सदैव देखो, एक परिचय रहता है क्या देखो यहाँ यागों में जो नाना प्रकार के अयोग्य क्रियाकलाप हुए हैं उन क्रियाकलापों से मानव को अपना उत्थान करना चाहिए और राष्ट्र, अपने राष्ट्र का निराकरण करने वाला हो।

राजा को राष्ट्र उत्थान की प्रेरणा

आधुनिक काल जो है–ये राजा अपने राष्ट्र का निराकरण नहीं करना चाहता, राजा ये चाहता है क्या रक्तभरी क्रान्ति आती रहें तो तेरा यह राष्ट्र बना रहेगा केवल यह भावना रहती है। मैं यह कहता हूँ ये नाना प्रकार का जो सम्प्रदाय युग चल रहा है ये सम्प्रदायों के युग में मानव का जीवन सुरक्षित नहीं है, मानव का ज्ञान सुरक्षित नहीं है, मानव का तप भी सुरक्षित नहीं है

उसके मूल में क्या है कि नाना प्रकार की सम्प्रदायों में अज्ञान है देखो वह केवल यागों के ऊपर ही आक्रमण करता है। वह विचारों के ऊपर आक्रमण हो रहा है। जब विचारों के ऊपर आक्रमण होता है तो समाज में और राजा के राष्ट्र में शान्ति नहीं। तो राजा को अपने राष्ट्र में निराकरण करना है। उसका निराकरण केवल एक ही है, यदि राजा चाहता है कि निराकरण आ जाए तो देखो नाना प्रकार के जो रूढ़िवादी हैं जिन्हें ये धर्म कहते हैं, मैं धर्म नहीं कहता उन्हें रूढ़ि कहा करता हूँ, उन्हें सम्प्रदा के रूप में कहा करता हूँ। उन नाना सम्प्रदायों के आचार्यों का सम्मेलन हो और आचार्यों का सम्मेलन हो करके राजा को मध्यस्था करनी चाहिए और उनका शास्त्रार्थ होना चाहिए, विचार-विनिमय तर्क संहिता होनी चाहिए, उसी तर्क संहिता के आधार पर उनकी आचार संहिता होनी चाहिए और जो विज्ञान, तर्क और मानवीयता पर स्थिर हो जाए उन्हीं विचारों को अपना करके वही मानव का एकोकी धर्म कहलाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे ये वर्णन कराया क्या ये धर्म है।

यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियों से जगत ऊँचा नहीं बनेगा या राष्ट्र के लिए मानो ये कलङ्क है, ये राष्ट्र के लिए देखो अग्नि की धाराएँ उत्पन्न होने वाली हैं और हो रही हैं। प्राणी-प्राणी का देखो भक्षण करने के लिए तत्पर हो रहा है, उसके मूल में केवल राष्ट्रवाद है, उसके मूल में रूढ़िवाद है। और रूढ़िवाद के मूल में देखो ये जो नाना प्रकार के प्राणियों को भक्षण करके मानव अपने जीवन की ऊर्ध्वा में लगा हुआ है ये सर्वत्र मानो विनाश का एक मूल कारण बना हुआ है। आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट करना नहीं चाहता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को मैं वर्णन कराता रहता हूँ क्या राष्ट्रवाद ऊँचा हो, महाराजा अश्वपति याग कर रहा है पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी वर्णन कर रहे थे। आधुनिक काल का राजा याग को चाहता हुआ भी नहीं कर पाता क्योंकि नाना प्रकार की रूढ़ियों की भय लगा हुआ है। जब इस प्रकार की धाराएँ बना करती हैं तो मानो देखो, ये धर्म और मानवता की रक्षा करना एक असम्भव बन जाता है। मैं यह कहता हूँ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कई काल में मुझे वर्णन कराया मैं भी इन्हें अवगत

कराता रहता हूँ कि संसार में सुगन्धि होनी चाहिए, दुर्गन्धि समाप्त हो जानी चाहिए। विचारों की सुगन्धि हो और मानो देखो, उन्हीं विचारों की सुगन्धि से मानव अपने जीवन को महान् बनाए। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मैं आज्ञा पाना चाहता हूँ।

आज्ञा पाने से पूर्व मानो मेरे दो शब्द ये क्या हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य बना रहे और तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे जब देखो भूः भुवः स्वः इन लोकों में तेरी वाणी देखो साकल्य के साथ में गमन करती रहे। ये आज का विचार अब हमारा समाप्त। अब मानो देखो, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने वाक्यों को उच्चारण किया। इनके वाक्यों में एक वेदना है, मानो वह वेदना है कि राष्ट्रवाद ऊँचा हो। वह वेदना है कि रूढ़िवाद समाप्त हो जाना चाहिए क्योंकि अति का नाम ही रूढ़ि कहलाता है। इसलिए धर्म, मानवता और राष्ट्रीयता एक ही सूत्र में सूत्रित होने चाहिए ऐसा मानो देखो, महानन्द जी के विचारों का एक मन्तव्य रहा है। मानो देखो यज्ञम् भवा सम्भवे यागों की उन्होंने चर्चा की वह बड़ा विचित्र उनका वाक्। मैं इनके वाक्यों के जब एक-एक शब्द पर विचार-विनिमय करता हूँ तो मुझे ऐसा ही प्रतीत होता है कि इनके हृदय में एक वेदना है और वह वेदना क्या मानो मानवीय धर्म की एक वेदना है, राष्ट्रीयता की एकता की वेदना है क्योंकि जो हमारे पूर्वज– हमारे जैसे भगवान् मनु की चर्चा की इस प्रकार के जो पूर्वजों की चर्चाएँ हैं वो बड़ी विचित्र हैं। महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में मुझे बहुत समय हुआ पुत्रों, मुझे वहाँ जाने का और वास करने का भी सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मानो देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ विद्यालयों में बहुत समय तक अध्यापन किए हैं परन्तु देखो यागों की कर्मकाण्ड की पद्धति भी बड़ी विचित्र रही है। आज हमें इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है।

केवल विचार ये क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना और यागों का चयन प्रायः हमारे हृदयों में होना चाहिए। हमारी वाणी में याग हो, हमारे नेत्रों में याग हो, हमारे श्रोत्रों में याग हो। याग क्या मानो देखो, सुविचार होने चाहिए, सुदृष्टि होनी चाहिए, सुशब्द होना चाहिए, सुप्रिति होनी चाहिए प्रत्येक मानव अपनी आभा में मानव को ऊँचा बनना चाहिए। ये आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः मं रथम् रिवा रेवा आभ्याम् गतऊ सर्वा माम् दधि आभाऽम्।

ओ३म् स्वञ्जनं रिवा गतम् दिव्याऽम्।।

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद गुरुदेव–ओ३म् शान्तिः।

दिनाँक : 17 जनवरी, 1986
समय : प्रातः 11:00 बजे
स्थान : श्री कालूराम त्यागी
ग्राम दिनकरपुर,
मुजफ्फरनगर

नम्र-निवेदन

समिति के बैंक के खाते में दान की राशि हस्तान्तरण करने से दानदाताओं व अन्य महानुभावों द्वारा भेजी गई राशि के नाम, पता व उद्देश्य इत्यादि की जानकारी बैंक से प्राप्त नहीं हो पाती है इसलिए सभी से नम्र-निवेदन है कि राशि बैंक के खाते में हस्तान्तरण करने के साथ-साथ समिति की वेबसाइट पर या निम्न किसी भी एक पते पर भेजी गई राशि का विवरण देने का कष्ट करें–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   के-3, लाजपत नगर-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 9810887207

॥ ओ३म् ॥

महाराजा अश्वपति का राष्ट्र

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, जितना भी ये जड़-जगत अथवा चैतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वो मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। जिस भी काल में ज्ञान और विज्ञानवेत्ताओं ने उस परमपिता परमात्मा की महती के ऊपर विचार-विनिमय प्रारम्भ किया है, उसी काल में मानो उस महामना देव की महिमा सर्वत्र एक-एक कण-कण में दृष्टिपात आती रही है। परमाणुवाद गति कर रहा है, परन्तु वो गतिवान् देव है। वह परमाणु जो उसका आयतन माना गया है, वह उसका सदन है, वह उसका गृह है। तो जितना भी ये ब्रह्माण्ड हमें दृष्टिपात आ रहा है, ये उस परमपिता का एक आयतन माना गया है अथवा उसका सदन व गृह है। वह उसमें वास कर रहा है और वह सर्वत्रता में विद्यमान है।

प्रेरणा का स्त्रोत

आज का हमारा वेद मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता रहता है। क्योंकि संसार का जितना भी प्राणिमात्र है, वो एक दूसरे से प्रेरित रहता है अथवा वह प्रेरणा का एक स्त्रोत माना गया है। और प्रेरणादायक कौन है, मानो वही मेरा प्यारा प्रभु हमें दृष्टिपात आता है। मेरे प्यारे! वो प्रेरणा का

स्त्रोत है। इसीलिए हमेशा अपनी मनोनीत को हृदयङ्गम करते हुए उस प्रभु का चिन्तन करना चाहिए। वो प्रभु हमारे समीप रहता है। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र ऊँची-ऊँची हमें प्रेरणा दे रहा है। हमें नाना प्रकार की वार्त्ताएँ प्रकट करता रहता है। **हमारा जीवन वास्तव में उस परमपिता परमात्मा की महिमा में ओत-प्रोत रहना चाहिए जिससे संसार में दूसरा प्राणी हमसे प्रेरित होकर के अपने जीवन को महान् बना सके। अपने जीवन को पवित्रता की आभा में ले जाए।** हमारे यहाँ नाना राष्ट्रवेत्ता हुए हैं, और उन राष्ट्रवेत्ताओं में भिन्न-भिन्न प्रकार के विज्ञानवेत्ता हुए। परन्तु हमें ऐसा कुछ प्रतीत हुआ है, जितने भी राष्ट्रवेत्ता हुए हैं, उनकी सबसे प्रथम जो निर्माणशाला है, उनकी राष्ट्रीयता की जो निर्माणशालाएँ हैं, उनका जो प्रारम्भ है वो विद्यालय से हुआ करता है। मैंने कई काल में वर्णन करते हुए और ये विचार देते हुए कहा क्या हमारे यहाँ विद्यालयों में जब आचार्य आयुर्वेद के मर्म को जानने वाला होता है, तो आचार्य ब्रह्मचारी के मस्तिष्क का अध्ययन करता रहता है। और जब मस्तिष्क का अध्ययन करता है तो ये उसे निर्णय दे देता है क्या ये ब्रह्मचारी कौन से वर्ण में जाने योग्य है, मानो कौन सी इसे अपनी विचारधारा में रत्त रहना है, आचार्य अपनी घोषणा कर देता है।

महाराजा अश्वपति का जीवन

आज मैं आओ तुम्हें महाराजा अश्वपति के एक राष्ट्र में ले जाना चाहता हूँ। महाराजा अश्वपति महाराज अपने में बेटा! बड़े विचित्र राजा थे। मानो वो राष्ट्र के अन्न को भी ग्रहण नहीं करते थे। वे जिस स्थली पर रहते, आवास करते थे, वहाँ स्वयँ अपना कला कौशल अथवा कृषि का उद्गम करने के पश्चात् उसमें जो अन्नादि की उत्पत्ति होती उसे पान करना और उसी में मग्न रह कर के राष्ट्र का निर्माण, राष्ट्र की आभा में समाज के मानो कार्यों में रत्त रहते थे। एक समय बेटा! महाराजा अश्वपति ने नाना ऋषि-मुनियों का एक समाज एकत्रित किया। और नाना ऋषियों में कौन-कौन

ऋषि उस समय थे, बेटा! उनका नामोकरण इस प्रकार है, मानो महाराजा अश्वपति के काल में महर्षि प्रवाहण, महर्षि शिलक, महर्षि दालभ्य, महर्षि रेणकेतु, देव ऋषि नारद, महर्षि वैशम्पायन, और महर्षि सुकेता, और महर्षि कवन्धि, और महर्षि वरेतकेतु और मुनिवरो! देखो, इसमें महर्षि भृगु, और भी जैसे महर्षि विश्वानन केतु और महाराजा जमदग्नि इत्यादि। ऋषि-मुनियों का एक समाज–इन महान् पुरुषों में बेटा! विज्ञानवेत्ता, आध्यात्मिक विज्ञान को और भौतिक विज्ञान के मिलान की चर्चा करते रहते थे। मेरे पुत्रो! देखो उन ऋषियों में ब्रह्मवेत्ता भी थे जो वह भौतिक विज्ञान से उपराम होकर के आध्यात्मिकवाद का और भौतिक विज्ञान का समन्वय करते रहते थे।

सोम रस

मेरे प्यारे! कुछ ऋषि इस प्रकार के थे जो ब्रह्म की उड़ाने उड़ते रहते थे, वे ब्रह्म में ही समाधिष्ट रहते थे। कुछ ऐसे ब्रह्मवेत्ता थे जो बेटा! कि जनता में जनार्दन में, मानो जनता को जनार्दन में दृष्टिपात करके उस मानो देखो उस ज्ञान के अमृत को पान करते थे। कुछ ऐसे ऋषि थे उन ऋषियों में बेटा! अपना देखो सोम रस का पान करते थे। वे सोम रस कौन सा है जिसे वो पान करते थे? मेरे प्यारे! देखो, वायु का सेवन करते, मानो देखो आपो का सेवन करते, और मुनिवरो! देखो, इन्द्रियों के विषयों का साकल्य बनाकर के, उसका मानो देखो रस बनाकर के उसका पान करते रहते थे। मैं बड़े आश्चर्य के शब्द तुम्हें उच्चारण कर रहा हूँ बेटा! हमारे यहाँ एक वाक्य आता है कि हम सोम रस का पान करना चाहते हैं। बेटा! सोम रस किसे कहते हैं। मुनिवरो! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि भृगु मुनि का जीवन। महर्षि भृगु मुनि एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो कर के वेद के कुछ मन्त्रों को लेकर के वह अध्ययन करते रहते। जब वेद के मन्त्र को लेकर के अध्ययन करते, तो एक समय कई वेद मन्त्रों में आया क्या "चक्षुम् में शुन्धामि, प्राणम् में शुन्धामि, श्रोत्रम् में शुन्धामि", मानो देखो ये पञ्च इन्द्रियों के शुन्धामि की चर्चाएँ आयीं। जब ये चर्चाएँ आने लगीं, तो मानो

देखो ये विचारने लगे कि ये तो शुन्धामि शब्द है। तो महर्षि भृगु मुनि ने, ऐसा मुझे स्मरण है एक समय बेटा! बारह वर्षों का उन्होने अनुष्ठान किया और बारह वर्षों तक यही अध्ययन करते रहे। वेद मन्त्र स्मरण है और दर्शनों का और मानो देखो वायु का और आपोमयी जलों का सेवन करके उसमें अन्नाद का मिश्रण करके पान करते थे। परन्तु देखो महात्मा भृगु के जीवन की वो वार्त्ताएँ स्मरण आती रहती हैं। जब बेटा! उन्हें बारह वर्षों का, जब छह वर्ष समाप्त हो गए, उन बारह वर्षों के मध्य में, एक अनुष्ठान के मध्य में पहुँचे, तो उन्हें ये ज्ञान हुआ कि ये अमृत, ये सोम रस है। उन्होंने सोम रस को जाना क्या प्रत्येक इन्द्रियों का जो विषय है, मानो देखो चक्षुओं का माम् ब्रहे विषय रूप है। मेरे प्यारे! श्रोत्रों का जो स्वरूप है वो शब्द है, रसना का विषय रस है और त्वचा का विषय प्रीति है, वाबब्रहे है। मेरे प्यारे! देखो, जहाँ सुगन्धमय अप्रते रहती है। मानो देखो अमृत सुगन्ध इत्यादि जो विषय हैं, मानो देखो इनका, इनके ऊपर अध्ययन प्रारम्भ करने लगे। जब अध्ययन चलता रहा, मुनिवरो! देखो, छह माह के पश्चात्, तपस्या के चरण में, मध्य चरण में जब पहुँचे, तो ये ज्ञान हुआ क्या इन्द्रियों का जो ज्ञान है, इन्द्रियों का जो साकल्य है, मानो देखो उसके ज्ञान और विज्ञान में जाना, और उसको अपने अन्तर्हृदय में पान करना, उसी को बेटा! देखो महर्षि ने सोम रस की उपाधि प्रदान की। मेरे प्यारे! देखो, उसे सोम रस कहा है।

उसे सोम रस क्यों कहा है, क्योंकि प्रत्येक इन्द्रियों का जो साकल्य है, उसको एकाग्र करके और मुनिवरो! देखो, वो ज्ञानाम् आगनम् ब्रह्मे जो उसमें ज्ञान है, मानो जहाँ उनका, दोनों का समावेश हुआ, उनका पञ्चीकरण हुआ, पञ्चीकरण होते बेटा! ज्ञान की अग्नि जागरूक हो जाती है। और मानव के जो मुनिवरो! देखो, दुरिता इन्द्रियों में जो तन्तु हैं, वो दूरी हो जाते हैं, और जहाँ भी उनकी अग्नि में बेटा! देखो मानव अपनी हवि का त्याग कर रहा है। मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाना चाहता हूँ। विचार-विनिमय क्या कि महात्मा भृगु का जीवन इस प्रकार का रहा है।

महाराजा अश्वपति की ऋषि-मुनियों से प्रार्थना

मेरे प्यारे! देखो, वह भी महाराजा अश्वपति की उस सभा में विद्यमान थे। तो मुनिवरो! देखो, महाराजा अश्वपति ने महर्षि भृगु मुनि महाराज को उस सभा की अध्यक्षता की उन्होंने प्रार्थना की। तो महात्मा भृगु ने ये कहा, क्या हे राजन्! मैं इस मध्यस्था के सुयोग्य नहीं हूँ। उन्होंने कहा प्रभु क्यों? उन्होंने कहा कि मैं इतना तप में नहीं हूँ, मानो देखो मेरे से ऊर्ध्वा-ऊर्ध्वा ऋषि विद्यमान हैं जिन्होंने बड़े-बड़े अनुष्ठान किए हैं जीवन में, भयँकर वनों में वायु के सेवन और जल को, अन्न को जल में ही तपा करके मानो पान किए हैं। मैं तो उनके, मानो देखो उनके मध्य में इस सभा का अधिकारी नहीं हूँ। मेरे प्यारे! देखो, महाराजा अश्वपति से जब ये महात्मा भृगु ने वार्त्ता प्रकट की तो उन्होंने महर्षि प्रवाहण से कहा कि प्रभु इस मानो देखो सभा की अध्यक्षता कीजिये। महर्षि प्रवाहण बोले कि प्रभु मैं वास्तव में मैं तपों में रहता तो हूँ, परन्तु देखो! इस सभा का अधिकारी नहीं हूँ। इसलिए महात्मा जो भृगु हैं, ये हमारे लिए सुयोग्य हैं, महात्मा भृगु को ही मानो देखो इसका सभापतित्त्व प्रदान किया जाए। मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने ऐसा कहा, तो वे शिलक और दालभ्य से बोले कि प्रभु आप में से कोई भी सभापति बने। उन्होंने कहा, हे भगवन्! हे राजन्! सभापति तो वो बनता है जो मानो देखो सभा का स्वामित्त्व करने वाला हो, नेतृत्व करने वाला हो। उन्होंने, दोनों ने एक स्वर में कहा, सभापतित्त्व तो वो करना जानता है, जो अपनी इन्द्रियों को संयम में करने वाला हो, जो अपनी इन्द्रियों के सभापतित्त्व को जान लेता है वही तो सभापतित्त्व को प्राप्त कर सकता है।

ब्रह्मवेत्ता और राजा

मेरे पुत्रो! देखो राजा ने जब उन दोनों के वाक्यों को श्रवण किया, तो वे मानो देखो देवर्षि नारद मुनि के समीप पहुँचे। देवर्षि नारद मुनि के चरणों की वन्दना की। उन्होंने कहा हे प्रभु, आप ही सभापतित्त्व को अपनाए हम आपको निर्वाचन करना चाहते हैं। उन्होंने कहा, हे राजन्! क्या राजाओं का

निर्वाचन किया हुआ, एक ऋषि को राजा कैसे निर्वाचन कर सकता है? क्योंकि वो तो राजा होता है, वह अनुशासन करना जानता है प्रजा पे, वो ऋषियों को मानो देखो सभापतित्त्व की चुनौती या उसको निर्वाचन नहीं कर सकता। निर्वाचन कौन करते हैं, ब्रह्मवेत्ता का निर्वाचन ब्रह्मवेत्ता ही किया करते हैं। आप इस सभा में क्यों उपस्थित हो गए हैं? आपने सभा नियुक्त की है, आप शान्त रहिए। इन ब्रह्मवेत्ताओं में से कोई न कोई अपना नेतृत्व, सभापतित्त्व की चुनौती आप परणित करेंगे। अब बेटा! देखो राजा मौन हो गए। राजा ने कहा ये तो ब्रह्मवेत्ताओं का, ये तो जो ब्रह्म जिज्ञासु हैं, यथार्थी हैं ये तो बड़े विचित्र हैं। मानो देखो राजा मौन हो गए।

जब राजा मौन हो गए तो इतने में बेटा! देखो ब्रह्मचारी कवन्धि उपस्थित हुए। महर्षि कवन्धि ने कहा–हे ब्रह्मवेत्ताओ! तुमने इस सभा के वाक्यों को श्रवण किया है। अब ब्रह्मवेत्ताओं तुम अपना एक सभापतित्त्व नियुक्त करके जो तुममें तपस्वी हो, और इस सभा के लिए जिस सभा का निर्वाचन किया है, आज सब एकत्रित हुए हो उसका एक-एक दूसरा अपना-अपना समाधान प्रकट करता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि, महर्षि कवन्धि की वार्त्ताएँ बेटा! देखो सबको शिरोमणी हो गयीं।

श्वेता मुनि का सभा में आगमन

इतने में बेटा! कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि उद्दालक मुनि के, मानो देखो उनके महापिता कहीं से भ्रमण करते हुए श्वेता मुनि भी वहाँ पधारे। बेटा! श्वेता मुनि के आते ही, ऋषि-मुनि बेटा! एक दूसरे में मानो उनका अभिवादन करने लगे। अपने-अपने स्थानों से मानो उपस्थित हो करके उनका आदर किया। उन्होंने कहा आओ श्वेता मुनि जी महाराज। मेरे प्यारे! देखो, विराजमान हो गए और श्वेता मुनि ने किसी वाक्य, मानो देखो ब्रह्मवेत्ताओं के वाक्य को श्रवण न करके उन्होंने जो आसन लगा हुआ था उस आसन पर बेटा! स्वतः विद्यमान हो गए। मेरे प्यारे! जब विद्यमान हो गए, तो ब्रह्मवेत्ताओं में कुछ में प्रसन्नत्ता हुई और कुछ ब्रह्मवेत्ताओं में घृणा

हुई। मेरे प्यारे! जो ऊँचे ब्रह्मवेत्ता थे, उनमें तो घृणा नहीं हुई, परन्तु जो निम्न कोटि ब्राह्मण समाज था उसमें एक-एक मानो, उनके हृदयों में एक कलह की भावना उत्पन्न हुई। मेरे प्यारे! देखो, उनमें से कौन थे, उनमें से महर्षि स्वामप्राति था। स्वामप्राति मुनि ने कहा–हे प्रभो! हे श्वेता! हे श्वेतमान्! मानो तुमने इस पद को अपने अधिकार में लिया है, ये किससे तुमने आज्ञा लई है। उन्होंने कहा कि–मेरा अन्तरात्मा मुझे आज्ञा दे रहा है मेरा अन्तरात्मा मुझे आज्ञा दे रहा है इसलिए मैंने इस सभा को अपने में, मानो मैं सभापति क्या मैं तो आसन को ग्रहण कर गया हूँ। सभापति जिसकी इच्छा हो वो अब प्राप्त करे। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि वह जब उन्होंने ये बताया तो वो मौन हो गए।

बेटा! देखो ब्रह्मवेत्ता श्वेतकेतु मुनि महाराज उपस्थित हुए। श्वेतकेतु ने कहा हे भगवन्! मैं आपसे जानना चाहता हूँ क्या आप सब ऋषियों के सभापतित्त्व को आपने प्राप्त किया है परन्तु हम ये जानना चाहते हैं कि सभापति कहते किसे हैं। मेरे प्यारे! देखो, श्वेतर ने कहा क्या हे ऋषियों सभापति उसे कहते हैं जो अपनी अन्तरात्मा के अनुकूल संसार में क्रियाकलाप करता है। अब मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनियों में इस वाक्य के ऊपर बड़ी एक विचित्रताएँ उत्पन्न होने लगीं। उन्होंने कहा प्रभु ये कैसे जानकारी हो के आत्मा के अनुकूल कर रहा है। उन्होंने कहा कि आत्मा के अनुकूल वो क्रियाकलाप करता है प्राणी जो ब्रह्म की, मानो ब्रह्म को सर्वज्ञ स्वीकार करता है। क्योंकि जहाँ से उसे आत्मा में, मनों में जिस में शङ्का, लज्जा उत्पन्न न हो, किसी से घृणा न हो, मानो देखो अपनी इन्द्रियों के अधिपत्य लाने वाला हो, वही तो देखो सभापतित्त्व को प्राप्त कर सकता है।

घ्राण और श्रोत्र इन्द्रियों का स्वरूप

अब मेरे प्यारे! देखो, ऋषि-मुनियों में मानो देखो वह श्वेतर से नाना प्रकार के प्रश्न होने लगे कि महाराज आप अपनी इन्द्रियों को जानते हो? उन्होंने कहा आप प्रश्न करो। उन्होंने कहा तुम घ्राण-इन्द्रिय को जानते हो? उन्होंने

कहा मैं जानता हूँ, जितना जानता हूँ उतना उत्तर दे सकूँगा। उन्होंने कहा तो घ्राण-इन्द्रिय क्या है? उन्होंने कहा ये घ्राण-इन्द्रिय जो मन्द और सुगन्ध का ज्ञान कराती है, मन्द और सुगन्ध का ज्ञान कराती है और घ्राण-इन्द्रिय वह जानने वाला प्राणी होता है जो दुर्गन्ध को त्यागने वाला हो और जो सुगन्ध को अपनाने वाला हो। और सुगन्ध को अपनाकर के घ्राण-इन्द्रियों को मानो नीचे परमाणुवाद, मानो देखो घ्राण से स्पर्श होते ही परमाणु का ज्ञान हो जाए ये परमाणु पार्थिक है या ये अग्निमय है या ये आपोमय परमाणु है और इस परमाणु की मानो आयु और प्राण से क्या-क्या समन्वय हो रहा है। जो इस प्रकार जानता है वो घ्राण इन्द्रियों का स्वामित्व होता है। ऋषियों ने कहा के प्रभु आप जानते हैं? मानो मैं जानता तो नहीं हूँ परन्तु इसका मैं साधक बना हुआ हूँ। अनुसन्धान कर रहा हूँ। कुछ अनुसन्धान कर रहा हूँ, कुछ कर पाया हूँ। मेरे प्यारे! देखो, वो ऋषि मौन हो गए।

अब मुनिवरो! देखो, इसमें और द्वितीय ऋषियों ने, महर्षि प्रवाहण ने एक प्रश्न कर दिया क्या प्रभु आप जो हैं, श्रोत्र इन्द्रियों को जानते हैं? उन्होंने कहा–मैं जानता हूँ। क्या श्रोत्र इन्द्रियों का वृत्तम विषय–उन्होंने कहा श्रोत्र इन्द्रियों का जो देवता है वे मानो देखो वो शब्द है। और शब्दों की जो गतियाँ हैं, वे वायुमण्डल में चारों दिशाओं से उनका समन्वय रहता है। और दिशाएँ जो हैं, वे मानो देखो वही दिशा देखो अपनी-अपनी आभा से पिरोई हुई है। वे प्राण से पिरोई प्रत्येक दिशा है और उसका समन्वय वायु से है और वायु का समन्वय अन्तरिक्ष से है। इसलिए मानो वो जो शब्द है उसकी गति अन्तरिक्ष में रहती है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि उत्तर पा करके मौन हो गए। अब बारी-बारी मुनिवरो! देखो, ऋषि मुनियों ने ये निश्चय कर लिया कि ये हम में ब्रह्मवेत्ता क्या ये मानो देखो सभापति के योग्य है।

महर्षि वशिष्ठ मुनि द्वारा महाराजा अश्वपति का परिचय

अब मुनिवरो! देखो, राजा उस सभा को दृष्टिपात करके अपने में आश्चर्य कर रहा है और ये विचार रहा है कि इन ब्रह्मवेत्ताओं में या इन

श्रोत्रिय ऋषियों में मैं क्या प्रसङ्ग कर सकता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, राजा ने, राजा के जो पुरोहित थे महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज। देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज पुरोहित बने हुए थे, वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये प्रसङ्ग उपस्थित किया क्या महाराजा अश्वपति के, अश्वपति का उन्होंने परिचय दिया क्या ये राजा अश्वपति हैं और राजा अपने राष्ट्र का पालन कर रहे हैं और इनकी इच्छा ये है क्या मेरे राष्ट्र में, मानो मेरा राष्ट्र कैसे पवित्र बने। मेरे राष्ट्र में ज्ञान और विज्ञान और ब्रह्मवर्चोसि का प्रवाह कैसे उत्पन्न हो सकता है? या कैसे प्रवाह से गति कर सकता है जिससे कोई भी प्राणी मेरे राष्ट्र में देखो मेरे क्रियाकलापों से चिन्तित न रहे। मेरे प्यारे! देखो, जब ये प्रसङ्ग वशिष्ठ मुनि महाराज ने उपस्थित किया, तो मुनिवरो! देखो, इतने में श्वेता ने कहा क्या हे प्रभु हम ये जानना चाहते हैं वशिष्ठ क्या महाराजा अश्वपति तो वो होता है जो अश्वमेध याग करना जानता है। देखो, अश्वपति तो वो होता है जो वृष्टि याग करना जानता है। और राजा देखो वह अश्वपति होता है जो अपने ही मानो क्रियाकलापों से अन्न को उत्पन्न करके उसको पान करता है। क्या राजा में ये गुण हैं जो इसको तुम अश्वपति कहते हो, मैं तो जानता नहीं हूँ, आप, वशिष्ठ मुनि महाराज निर्णय दीजिये। तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने ये अपना निर्णय दिया क्या महाराज ये जो अश्वपति जी हैं ये महाराज बड़े विचित्र हैं। इनकी देवी और ये दोनों प्रातःकाल से मानो उस समय तक अपनी कृषि में उद्गम करते हैं और उसमें जो अन्न उत्पन्न होता है उसे ये पान करते हैं और राष्ट्र में व्यस्त रहते हैं कि मेरी प्रजा कैसे ऊँची बने, कैसे मानो देखो याज्ञिक बने। ये प्रातःकालीन याग करते हैं, दैनिक याग करके कामधेनु गऊओं की सेवा करते हैं, उस दुग्ध का आहार करते हैं, बुद्धि इनकी शुद्ध रहती है। मानो ये अपने में विचित्र हैं, योगाभ्यास भी कुछ करते रहते हैं, मानो देखो शारीरिक उद्योग करते हुए अपने में और देखो सर्वत्र जितने भी क्रियाकलाप राष्ट्र में हो रहे हैं, उनमें ये भ्रमण भी करते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, श्वेता ने इस वाक्य को स्वीकार कर लिया और उन्होंने कहा के अब बोलो क्या चाहते

हो, इस सभा से या इस विद्वानों की सभा में ब्रह्मवेत्ताओं की, ब्रह्मनिष्ठों की सभा में तुम क्या चाहते हो, राजा की क्या इच्छा है?

पवित्र प्रारम्भिक जीवन के क्रियाकलापों पर ऋषि-मुनियों के उद्‌गार

मुनिवरो! देखो, इतने में महाराजा अश्वपति ने चरणों को स्पर्श कर के कहा हे प्रभु मेरी इच्छा ये है क्या मेरे राष्ट्र में प्रारम्भिक जो जीवन है, वो ऊँचा होना चाहिए हम उसके क्रियाकलापों को आपके मुखारबिन्दु से, आपके निर्णय से जानना चाहते हैं। मुनिवरो! देखो, महाराज अश्वपति ने नाना यन्त्रों-तन्त्रों से मानो उनके विचारों को यन्त्रों में अपने निर्धारण कराने लगे। तो बेटा! मुझे भी कुछ ऐसा स्मरण आता रहा है, ऐसा स्मरण आ रहा है, क्या मानो देखो विचार-विनिमय होने लगा, और महाराजा श्वेता ने ऋषि-मुनियों से ये कहा हे देवताओं! अब तुम अपना-अपना निर्णय दो जो राजा प्रश्न कर रहा है।

महर्षि प्रवाहण के वचनामृत

मुनिवरो! देखो, इतने में महर्षि प्रवाहण जी उपस्थित हुए। महर्षि प्रवाहण ने कहा क्या हे प्रभु आपको तो ये प्रतीत है कि हमारी जो माता थी, वे माता मानो कितनी विचित्र थी। मेरी प्यारी माता का नाम मदालसा था और मदालसा के गर्भस्थल में जब हम विद्यमान थे, तो माता अपने गर्भ के बालक से मानो देखो चर्चा, उनसे मिलन करती रहती थी। ये मैं बड़ा विचित्र वाक्य प्रगट कर रहा हूँ। क्योंकि माता के गर्भस्थल में जब शिशु होता है तो माता, वह अपने गर्भ में ही बालक को देखो ब्रह्मवेत्ता बना देती है। और जिस प्रकार का वह बनाना चाहती है मानो वही संस्कार उसमें परणित करने लगती है। वेद का अध्ययन करना, वेदों की व्याख्या करना, जिस प्रकार का निर्माण कराना चाहती है, तो मानो देखो इस प्रकार राजन्, यदि तुम अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हो, तो तुम्हारे राष्ट्र में इन देवियों का, मानो देखो मेरी माता और पुत्रियों का मानो आदर होना चाहिए और इनके यहाँ

इनका ऊर्ध्वा में मानो इनका मस्तिष्क रहना चाहिए। इनको ब्रह्मविद्या का अध्ययन कराया जाए। आयुर्वेद का अध्ययन कराया जाए। इनको मानो देखो नाना प्रकार की विद्या का अध्ययन कराओगे तो मानो उसी प्रकार के परमाणुओं का जन्म होगा और माता के गर्भ में जब शिशु का प्रवेश होगा तो वह विद्या मानो देखो उसमें भरण हो जाती है। इसलिए सन्तानों का पवित्र होना इस मानो देखो राष्ट्र के लिए सर्वोपरि माना जाए। मेरे पुत्रो! देखो ये वाक्य, ये विचार मेरे पुत्रो! देखो ऋषि प्रवाहण ने अपने विचारों में प्रगट किया। मेरी प्यारी मदालसा के गर्भ में जब हम मानो गर्भ से पृथक हो कर के लोरियों का पान करते तो वो दर्शनों की भाषा में हमें नाना प्रकार की शिक्षाएँ प्रदान करती रहती थीं। उसका परिणाम ये हुआ क्या प्रवाहण और शिलक और दालभ्य हम तीनों मानो माता मदालसा के पुत्र हैं और तीनों ब्रह्मवेत्ता हैं। तपस्या में ही माता ने परणित कर दिया तो इसलिए हमारे जीवन में जब त्रुटि नहीं आएगी तो हम समाज को एक ऊर्ध्वायु बना सकते हैं। राष्ट्र को प्राण भी दे सकते हैं विचारों के, विचार रुपी प्राणों का प्रदान कर सकते हैं। मानो देखो ये वाक्य महर्षि प्रवाहण ने शिलक और दालभ्य के विचारों में बेटा! देखो ये सिद्ध कर दिया कि माता का पवित्र होना, माता का बुद्धिमान होना, माता को मानो महान् बनाना ये मानो देखो राष्ट्रीयता का पहला चरण कहा जाता है।

मेरे प्यारे! देखो, जब इन तीनों की वार्त्ता समाप्त हो गयी तो श्वेता, मानो सभापति ने और ऋषि, महात्मा वशिष्ठ मुनि महाराज ने आगे ऋषियों से कहा के अपना निर्णय दो, जो-जो निर्णय देने वाला है, उस वाक्य को प्रगट करो।

देव ऋषि नारद मुनि द्वारा विद्यालयों का दिग्दर्शन

इतने में बेटा! देव ऋषि नारद मुनि महाराज उपस्थित हुए और देव ऋषि नारद मुनि ने कहा क्या मेरे विचारों में मानो देखो जहाँ माता का मस्तक ऊँचा किया जाए, माता को विद्यालयों में ब्रह्मचारिणियों को मानो

ब्रह्मचर्य से सजातीय बनाया जाए, वहाँ उनकी शिक्षा के लिए मानो कौन होना चाहिए। उनकी शिक्षा के लिए पुरुष होना चाहिए या मेरी पुत्री होनी चाहिए। तो नारद मुनि ने ये कहा क्या विद्यालयों में, मानो देखो कन्या विद्यालयों में ब्रह्मचारिणियों में वानप्रस्थिनी होनी चाहिए, मानो युवा नहीं होने चाहिएँ जिनको पतियों का नवीन सहयोग प्राप्त हुआ हो वे नहीं होनी चाहिएँ। जो गृहस्थ को त्याग कर के वानप्रस्थ और आरण्य नाम की अग्नि में जो तपने जा रही हैं उन मानो वानप्रस्थियों को शिक्षा देनी चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, ये वाक्य देव ऋषि नारद मुनि ने कहा और नारद मुनि ने निर्णय दे दिया क्या वे ही देखो वानप्रस्थी जो विद्वान् होते हैं वे ही मानो देखो उनका निराकरण करेंगे क्या ये कन्या देखो, ये कन्या क्षत्रिय कुल में जाए, ये ब्राह्मण कुल में जाए या ये मानो वैश्य कुल में जाए। इनके विद्या के माध्यम हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों को लेकर के मानो जहाँ माता सहयोगी होती हैं, वहाँ विद्यालयों में देखो शिक्षक सहयोगी होना चाहिए। शिक्षक को अपने में मानो चिन्तन महीन, सूक्ष्म-से-सूक्ष्म चिन्तन करना चाहिए। जिस चिन्तन में दर्शन हो, मानव दर्शन हो, जिस चिन्तन में मानो ब्रह्मचर्य की ऊर्ध्वागति हो, ध्रुवागति न हो, ऐसे मानो देखो आचार्य जब विद्यालयों में निर्माण करेंगे तो बेटा! वह निर्माणशाला पवित्र बनती रहेंगी। मेरे प्यारे! देखो, नारद मुनि ने यही वाक्य देखो ब्रह्मचारियों के लिए कहा, क्या विद्यालयों में ब्रह्मचारियों को शिक्षा देने वाले देखो वानप्रस्थ होने चाहिए। जिनका उनको मनोविज्ञान उनका विचित्र बन जाए, मनोविज्ञान में मानो उनकी तरङ्गें उन्हें स्पर्श ना कर पावें तरङ्गे अपने में तरङ्गीत हो कर के मानो देखो वह विद्यालयों को पवित्र बनाएँ।

उन्होंने बेटा! एक वाक्य उद्धृत करते हुए कहा क्या, मैं एक समय मगध राष्ट्र में भ्रमण करने के लिए गया था। तो मगध राष्ट्र में एक विद्यालय में मौनकेतु मुनि महाराज अपने ब्रह्मचारियों को विद्या प्रदान कर रहे थे। जब प्रदान कर रहे थे तो प्रातःकालीन मैं भी उस विद्यालय में जब प्रातःकालीन याग होता था, मानो ब्रह्म देव याग के पश्चात्, ब्रह्म याग की,

वेदों की चर्चाएँ होने लगीं। जब चर्चाएँ होने लगीं तो मानो देखो उस समय ऋषि ने अपना वर्णन करते हुए वेद का अध्ययन किया, अध्ययन करने के पश्चात् उन्होंने कहा ब्रह्मचारियों इसमें तो तप की व्याख्या आ रही है। ये तो **संसार बिना तप के ऊँचा नहीं बन सकता।** यहाँ तो एक-एक परमाणु तप रहा है, माता तप रही है, पितर तप रहा है, आचार्य तप रहा है, ब्रह्मचारी तप रहा है, सूर्य तप रहा है, तो पृथ्वी तप रही है, पृथ्वी सूर्य तप रहा है तो चन्द्रमा और तारामण्डल अपनी-अपनी आभा में तपायमान हैं। जब ये प्रकृतिवाद तपायमान है, नाना प्रकार के व्यजनों को जन्म देता रहता है। तो इसी प्रकार मेरे हृदय में ये वाक्य आ रहा है, ब्रह्मचारियों मैं तपने जा रहा हूँ, तुम्हारी कोई इच्छा है? तो उस समय देखो ब्रह्मचारियों ने कहा–हे प्रभु! आप तप करने जाइए, आप तपेंगे तो हमारा जीवन तपोमय बनेगा। आप वैज्ञानिक बनेंगे हमारा जीवन वैज्ञानिक बनेगा, आप मानो ब्रह्मवेत्ता बनोगे, ब्रह्म को निर्णय करोगे तो हम ब्रह्मवेत्ता बनेंगे, हम में तरङ्गें आएँगीं। मानो ब्रह्मचारियों ने आचार्य को बारह वर्ष के लिए, मानो देखो तप करने के लिए चले गए। बारह वर्ष के काल में उन्होंने देखो भयँकर वनों में उस अन्न को पान करने लगे, उन वनस्पतियों का पान किया उन्होंने बारह वर्षों तक मानो देखो पत्र-पुष्पों का पान करना, अमृताम् पान करते हुए अमृत बना करके पान करते थे। मानो देखो इन्द्रियों पे अनुसन्धान करते हुए, तपोमय बना कर के मेरे प्यारे! देखो, बारह वर्षों के पश्चात् विद्यालय में पधारे।

ब्रह्मचारी तपस्या कर रहे हैं, एक-दूसरे में शब्दों की रचना कर रहे हैं, मानो वे पठन-पाठन की प्रतिक्रिया में लगे हुए हैं। आचार्य आए, मानो देखो उनका स्वागत किया, और उन्होंने कहा धन्य है प्रभु, अब हमें अपने अनुभव प्रगट कीजिए। तो ऋषि ने ब्रह्मचारियों को अपने अनुभव को प्रगट कराया। तो मेरे प्यारे! वही ब्रह्मचारी मानो देखो बुद्धिजीवी बन कर के अपने में, वृत्तियों में बन करके बेटा! देखो वर्णाश्रमों का निर्माण भी मानो विद्यालय में होता रहता है। तो देव ऋषि नारद मुनि ने कहा जब मैंने विद्यालय की इस प्रकार की प्रतिक्रियाएँ दृष्टिपात कीं, तो मेरा हृदय मानो

गद-गद हो गया और मैं अपने में ये स्वीकार करने लगा क्या वास्तव में इस प्रकार की प्रतिक्रिया होनी चाहिए। तो मेरे प्यारे! देखो, ये वाक्य उच्चारण करके देव ऋषि नारद मुनि अपने में मौन हो गए और वो अपनी स्थली पर विद्यमान हो गए।

श्वनेतकेतु मुनि महाराज की अमृत वर्षा

मेरे प्यारे! देखो, इतने में श्वनेतकेतु मुनि महाराज अपने में उपस्थित हुए और श्वनेत ऋषि ने कहा प्रभु मेरे विचारों में भी यही आता है क्या राष्ट्र में तपा हुआ राजा होना चाहिए जिसमें प्रत्येक इन्द्रियों पे जिसके संयम हो। और मानो देखो वह अपने राष्ट्र में प्रतिभाशाली–मानो देखो जो शिक्षा प्रणाली है वो इतनी पवित्र होनी चाहिए कि वह शिक्षा प्रणाली त्यागपूर्वक होनी चाहिए जिससे देखो ज्ञान और विज्ञान की आभा वाले ऋषि-मुनियों का जन्म हो। मेरे प्यारे! देखो, श्वनेत ये वाक्य कह करके अपने में शान्त हो गए।

महर्षि भृगु मुनि द्वारा सतोगुण का दर्शन

मेरे प्यारे! देखो, इतने में महर्षि भृगु मुनि उपस्थित हुए। भृगु मुनि ने कहा कि मेरे विचार में ये है कि जहाँ माता-पिता, माता को आयुर्वेद का अध्ययन कराया जाय, वहीं देखो आचार्यों को आयुर्वेद का अध्ययन कराया जाय। जिससे मस्तिष्क को जान कर के वह अपना निर्णय दे सकें क्या ये ब्रह्मचारी ब्राह्मण कुल में जाने योग्य है, ये ब्राह्मण के क्रियाकलापों को ऊँचा कर सकता है, मानो इसी प्रकार वही देखो, वह क्षत्रिय का निर्माण कर सकें। विद्यालय में वर्णाश्रम का जब निर्णय होता है, वे समाज को वर्णाश्रमवादी बनाते हैं।

देखो, ये वाक्य उच्चारण करके भृगु मुनि ने कहा, मेरे विचार में तो ये एक समय हमने, हमारे बहुत पुरातन काल हुआ एक सभा हुई थी। मानो देखो उस सभा में देखो हमारे यहाँ नाना ऋषि विद्यमान हुए थे। विद्यमान

होकर के मानो देखो एक समय 'ब्रह्माम् अमृते' ये निर्णय होने लगा क्या मानो देखो वह सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण में क्या-क्या विशेषता हैं। तो मानो देखो हमने एक समय ये निर्णय लिया हमारे यहाँ **तीन देवताओं का वर्णन** आता रहता है। हिमालय, मानो देखो शिव हिमालय पे रहने वाला है और विष्णु सूर्य लोक का राजा बना हुआ है और मानो देखो तमोगुण चन्द्र लोक का राजा बना हुआ है। जब ये निर्णय हुआ कि भई हम कैसे निर्णय करें–तो मानो देखो हमने इन तीन देवताओं को चुनौती प्रदान करने के लिए सबसे प्रथम, मानो देखो यह सबसे प्रथम मुझे ये निश्चय किया गया कि जाओ तुम इनका निर्णय करो। तो मानो देखो हम अपने वाहनों के द्वारा, मानो देखो हम सूर्य लोक में पहुँचे और सूर्य लोक में जा करके–"अमृतम् ब्रह्मा विष्णु वृतम" सबसे प्रथम देखो विष्णु लोक में नहीं, हम सबसे प्रथम देखो वह हम ब्रह्म लोक, ब्रह्म चन्द्र लोक में पहुँचे। जब मानो देखो हमें यह निर्णय दिया गया तुम इस प्रकार का क्रियाकलाप करना। तो मानो हमने ब्रह्मा के जा कर के अपने पगों की वृत्तियाँ कीं और देखो वह तमोगुण में छा गए। तमोगुण में छा करके मानो वहाँ से हमने गमन किया और भ्रमण करते हुए हम जब मानो हिमालय की आभा पे आए। तब वहाँ जब शिवजी पर इस प्रकार का आक्रमण किया शिव पे तो वे भी क्रोधित हो गए, दण्ड देने के लिए तत्पर हो गए। जब मानो देखो हम विष्णु पुरी में पहुँचे। जब विष्णु के यहाँ पहुँचे तो मानो जब उनके मस्तिष्क की ऊर्ध्वा आकृति देखो पश्चिम भाग में शरीर के जब पगों से ठुकराना प्रारम्भ किया तो उन्होंने, विष्णु चरणों को वन्दित करने लगे और चरणों को वन्दित करके बोले कि भगवन् आप तो बारह-बारह वर्ष के बहुत से अनुष्ठान कर चुके हो, आप तो बड़े मानो देखो आपका शरीर बड़ा नम्र है मानो ये कुरीतियों वृत्तियाँ है, हे प्रभो! मानो तुम्हारे बहुत पुण्यनीत हो गए होंगे। उन्होंने चरणों की वन्दना की। तो परिणाम उन्होंने एक उदाहरण को देते हुए कहा इस वाक्य को कल्प में उच्चारण करते हुए कहा क्या इससे हमें यह सिद्ध हुआ क्या चन्द्रमा की जो प्रतिभा है, वो उत्पत्तिदायक है और शिवजी की जो तरङ्गे हैं, वो मानो देखो

शासन प्रदायक हैं, और देखो ये जो विष्णु, सूर्य और नम्र, सतोगुण की प्रदायक है। इसीलिए देखो तीनो गुण तो ये स्वाभाविक रहते हैं परन्तु राजा के राष्ट्र में इस प्रकार के बुद्धिजीवी प्राणी, इस प्रकार के बुद्धिजीवी विद्यालयों में आचार्य होने चाहिए जो विष्णु की तरह सतोगुण के होने चाहिए, जो मानो देखो नम्र वह देखो दूसरों का निर्णय करें। तो मेरे प्यारे! देखो, यह वाक्य महर्षि भृगु ने उच्चारण कर के बेटा! वो अपनी स्थली पर मौन हो गए।

श्वेता ऋषि द्वारा उद्‌बोधन

अब मौन हो करके देखो मुनिवरो! देखो, उस सभा में "ब्रह्मेवाचक प्रवाहः लोकाम्" ये विचार-विनिमय होते-होते बेटा! देखो प्रातःकाल से सायंकाल हो गया और सायंकाल हो कर के श्वेता ने, श्वेता ऋषि ने बेटा! उस सभा को विसर्जन कर दिया और ये कहा कि ये चर्चाएँ निर्णय हम कल दे सकेंगे। ये निर्णय आज नहीं हो सकेगा। अब सन्ध्याकाल में चलो अपने-अपने कक्ष में जा करके सन्ध्या की कोशिश, मानो देखो अग्नि का ध्यान करो जिससे तुम्हारी बुद्धि में महानता की तरङ्गे आ कर के मानो तुम अच्छी प्रकार कल अपना निर्णय दे सको। तो मेरे प्यारे! देखो, श्वेता ये वाक्य कह करके अपनी सभापति स्थली को उन्होंने त्याग दिया। ऋषि-मुनि अपने-अपने कक्षों में जा पहुँचे।

मेरे प्यारे! देखो, विचार-विनिमय क्या है हमारा, हमारा विचार क्या है मेरे प्यारे! देखो, बहुत समय से हमारा ये वाक्य चल रहा है कि **हम कैसे ऊँचे बने, हमारा राष्ट्र कैसे पवित्र बने।** तो बेटा! ये चर्चा तो कल ही करेंगे। आज का विचार-विनिमय तो हमारा ये है क्या **ब्रह्मवेत्ताओं की सभाएँ होनी चाहिए**, ब्रह्मवेत्ता अपनी चुनौती स्वतः प्रदान करें, और वे अपना निर्णय दे करके और राजा को आदेश देने वाले हों मानो देखो इस प्रकार के बुद्धिजीवी प्राणी जिस काल में होते हैं, जिस समाज में होते हैं, और जिस भी मानो राजा के राष्ट्र में होते हैं बेटा! वो समाज, वो काल

महान् और पवित्र बना करता है। ये वाक्य मुनिवरो! देखो, अब समाप्त होने जा रहा है। आज के वाक्य उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या है, हम अपने में कितने विचित्र हैं बेटा! हम अपने में कितना विचित्र अपने को बनाएँ जिससे देखो **हम अपने मानवत्त्व को ऊँचा बना करके और प्रेरणादायक बन करके परमपिता परमात्मा का जो वैदिक साहित्य है, वेद का वाक्य उसको ले करके मेरे पुत्रो! हम समाज और राष्ट्र को ऊँचा बना सकें।** ये विचार बेटा! मैं आगे शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का विचार-विनिमय अब ये समाप्त होने जा रहा है।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हम बेटा! इस संसार सागर से पार हो जाएँ। मेरे प्यारे! आज मुझे कितनी सुन्दर एक प्रेरणा प्राप्त हुई है, क्या मुनिवरो! देखो, रजोगुण और तमोगुण के वाक्य। आज कोई मानो योगी बनना चाहता है तो उसे मुनिवरो! देखो, तमोगुण भी त्यागना है, रजोगुण भी त्यागना है, और सतोगुण को भी त्याग करके मुनिवरो! देखो, उसे, उससे भी उपराम होना है। एक रस हो करके मेरे प्यारे! क्योंकि वेद का आचार्य कहता है मोक्ष की पगडण्डी के लिए देखो **सतोगुण भी संस्कारों को जन्म देता है**, रजोगुण भी संस्कारों को जन्म देता है और तमोगुण भी संस्कारों को जन्म देता है, और जब तक मानो .....

शेष अनुपलब्ध

दिनाँक : 18 मार्च, 1986
समय : दोपहर 2:30 बजे
स्थान : चौ. फेरु सिंह
ग्राम लूम्ब, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. जो भी मानव ऊँचा प्रबल बनता है वह कर्मों के अनुसार और विचारों के अनुसार ऊँचा बना करता है।
2. हमारे शरीर में बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख, दस हजार दो सौ दो नाड़ियाँ कहलाती हैं।
3. मानव को प्राणायाम करना चाहिए।
4. ब्रह्मचर्य की गति जहाँ ब्रह्म में हुई तो उसी को ब्रह्मचारी कहते हैं।
5. जहाँ मन की गति चञ्चल हो वही प्राणायाम करो, मन की चञ्चलता समाप्त हो जाती है।
6. आत्मविश्वासी प्राणी राष्ट्र के राष्ट्र को कम्पायनमान कर देता है।
7. लक्ष्मी का यदि कोई पति है तो उसका नाम धर्म कहलाया गया है।
8. देवताओं को सर्वप्रथम हवि देना लक्ष्मी का सदुपयोग माना गया है।
9. यजमान का जब भी मन चञ्चल हो उसी समय अग्नि की जिव्हा के साथ नेत्रों की दृष्टि का समन्वय करना चाहिए।
10. जो मानव अपने द्रव्य का सदुपयोग करता है, देवताओं को अर्पित करता है वह बड़ा सौभाग्यशाली प्राणी होता है संसार में।
11. यह जो आत्मा है, यह ज्ञान स्वरूप है।
12. मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार का नाम अन्तःकरण कहलाया गया है।
13. द्रव्य कई प्रकार का होता है। एक द्रव्य लक्ष्मी का होता है, दूसरा विद्या का होता है और तीसरी सम्पदा शारीरिक बल की होती है।
14. शनि हमारे यहाँ कहते हैं ज्ञान को।
15. मानव का शब्द नित्य रहता है, किसी काल में भी नष्ट नहीं होता।
16. आत्मा जब शरीर को त्याग देती है तो सबसे प्रथम आत्मा अपने संस्कारों को ले करके वायुमण्डल में जाती है।
17. वेद नाम प्रकाश का है जो मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाने वाला है।

विशेष सूचना

वैदिक अनुसन्धान समिति की साधारण-सभा का आयोजन

वैदिक अनुसन्धान समिति के सभी आजीवन सदस्यों को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि समिति की नई कार्यकारिणी के चयन के लिए **साधारण सभा दिनाँक 26-9-2021** दिन रविवार को, **आर्य समाज मन्दिर, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017** में प्रातः 11.00 बजे आयोजित की जा रही है। सभी आजीवन सदस्य समय पर आकर भाग लेने का कष्ट करें।

सभा में विचारणीय विषय हैं–

1. पिछले वर्ष के आय-व्यय की समीक्षा और नए वर्ष के अनुमानित आय-व्यय पर विचार।
2. साहित्य व अधिनियम इत्यादि सम्बन्धित सभी विषयों पर विस्तार से विचार-विनिमय।
3. नई कार्यकारिणी का गठन।

अन्य विचार-विनिमय सभापति की अनुमति से।

विशेष–सभा की कार्यवाही प्रातः 11.00 बजे प्रारम्भ होगी। यदि कोरम पूरा नहीं हुआ तब सभा आधे घण्टे के लिए स्थगित की जाएगी। और पुनः उसी तिथि और स्थान पर उसी एजेन्डा के साथ प्रातः 11.30 बजे पुनः से कार्यक्रमार्थ सम्पन्न होगी।

मन्त्री
वैदिक अनसुन्धान समिति (पञ्जी.)

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	50.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पँचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली–	
स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
मास्टर कबीर, कुमारी रिधानी मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद	101 रुपये
कुमारी सृष्टा, मास्टर अव्युक्त, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें। जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या आनन्द को चाहता है, सुख को चाहता है परन्तु यह सुख कहाँ प्राप्त होता है? सुख हमें उसी काल में मिलता है जब हम सुख स्वरूप प्रभु को जान लेते हैं, ज्ञानमय आनन्द को जान लेते हैं, जिस ज्ञान-विज्ञान की महिमा को गाते हुए हमारे ऋषि-मुनियों ने भिन्न-भिन्न रूपों में अनेक अलंकारों में उस परमात्मा को अङ्कित किया। आज हमें परमपिता परमात्मा को अपने हृदय में अङ्कित कर लेना है, उस परमात्मन् इन्द्र को कल्याणकारी जान करके अपने मानवत्व को पवित्र बना लेना है।

हे परमात्मन्! तू कल्याण कर हमें ज्ञान और विज्ञान के शिखर पर ले जा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 49 : अंक : 581
सितम्बर 2021

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-09-2021
Published on 5th day of the same month

वर्ष 49 : अंक : 581
सितम्बर 2021

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-09-2021
Published on 5th day of the same month